पद ३२०

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

निराकार नी आकारनु अल्ला। ना देह भ्रांति बिडो।।१।। देह

अशाश्वत वस्तूने शाश्वत। मृत्यु चिंति बिट्ट कूडो।।२।। माणिक

निनगे ई मातु तिळिलिक्के। सद्गुरु सेवा नी माडो।।३।।

- निनवळगे नी निनग नोडो। यलो अनुमानिस ब्याडो।।धू.।।